पाठ - 8 **फरवरी 17 - 23**

दशमांश देने के प्रभाव

सब्त अपराह्न **फरवरी 17**

इस सप्ताह के अध्ययन के लिये पढ़ें : मार्क 16: 15; 1पत० 3: 8-9; 1कुरिं० 9: 14; रोम० 3: 19-24 ।

याद वचन : *"क्या तुम नहीं जानते कि जो मन्दिर में सेवा करते हैं वे मन्दिर में से खाते हैं; और जो वेदी की सेवा करते हैं, वे वेदी के साथ भागी होते हैं? इसी रीति से प्रभु ने भी ठहराया कि जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से हो" (1कुरिं० 9: 13-14)।*

जैसा हमने विगत सप्ताह देखा, दशमांश देना विश्वास की एक महत्त्वपूर्ण अभिव्यक्ति है। यह एक तरीके से हमारे पेशे की वास्तविकता को दर्शाना या जाँच करना है। "अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं। अपने आप को जाँचो। क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम जाँच में निकम्मे निकले हो" (2कुरिं० 13: 5)।

दशमांश देने की पहली बाईबलीय टिप्पणी है अब्राहम का मलिकिसिदक को दशमांश देना (उत्प० 14: 18-20, इब्रा० 7: 4) लेवियों ने भी मन्दिर में अपनी सेवा के लिये दशमांश लिया (2इति० 31: 4-10)। आज दशमांश सुसमाचार को सहारा देने के लिये है। जब सच्चाई से समझा जाये, यह परमेश्वर के साथ हमारे संबंध के आत्मिक नाप का कार्य करता है।

प्रभाव, व्यवहार, महत्त्व, और दशमांश देने में बांटवारे का सिद्धांत परमेश्वर के काम में सहारा देने में हमारी आत्मिक बढ़ोतरी के लिये और सुसमाचार प्रचार के लिये वित्तीय आधार उपलब्ध कराने के लिए नियुक्त है। यह परमेश्वर की योजना है और यह पहला पायदान कहलाता है जो एक विश्वस्त भण्डारी लेता है।

इस सप्ताह हम दशमांश देने पर अपनी निगाह जारी रखेंगे: इसका बांटवारा, दूसरों के लिये इसका अर्थ क्या है, और हमारी आत्मिक जिन्दगियों में इसके क्या प्रभाव हैं।

रविवार **फरवरी 18**

एक साथ हम मिशन के लिये धन देते हैं

यीशु हमें "सुसमाचार प्रचार" की आज्ञा देता है (मार्क 16: 15) और "चेले बनाने को कहता है" "उन्हें सब चीजें मानना सिखाओ" (मत्ती

- सब्त फरवरी 24 की तैयारी के लिये इस सप्ताह के पाठ का अध्ययन करें।

28: 19-20)। इस प्रकार परमेश्वर हमें इस पृथ्वी पर बहुत ही महत्त्वपूर्ण काम में सम्मिलित होने को कहता है: लोगों को यीशु तक लाना। परमेश्वर द्वारा हमें सौंपे गये संसाधनों से इस मिशन पर धन देना भण्डारी की जिम्मेदारी है। सहभागिता मसीह को दूसरों को पेश करने में व्यक्तिगत संकल्प को गहरा करता है। प्रत्येक शिष्य, भण्डारी, और कार्यकर्ता को इस धार्मिक कार्य के लिये सम्पूर्ण दशमांश लाना है। मिशन में धन जमा करने में विश्वस्त होने के लिये हमें एकता के लिये प्रार्थना करनी चाहिए, वैसा ही जैसा एक सफल मिशन विश्वास की हमारी एकता को मजबूत करता है।

इस मिशन (उद्देश्य) को प्राप्त करने के लिये परमेश्वर की स्वीकृत वित्तीय योजना क्या है? "सम्पूर्ण दशमांश" का क्या अर्थ है? (मला० 3: 10)। वाक्यांश "मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे" का क्या अर्थ है? (मला० 3: 10)।

जैसा कि हमने देखा है, लोग अब्राहम और याकूब के दिनों से दशमांश देते आ रहे हैं (उत्प० 14: 20, 28: 22) और संभवत: इससे पहले से। दशमांश एक व्यवस्था का हिस्सा है जो परमेश्वर की कलीसिया के लिये धन संग्रह करता है। यह धन संग्रह का महानतम स्रोत है और उसके उद्देश्य को पूरा करने का बहुत ही न्यायसंगत तरीका है।

आज की संस्कृति में, अधिकतर मसीही परमेश्वर के उद्देश्य हेतु धन संग्रह में बहुत कम देते हैं। यदि प्रत्येक मसीही ईमानदारीपूर्वक दशमांश देता, परिणाम "लगभग अकल्पनीय, सामान्यतय: आश्चर्य करने वाला समझ से परे होता।" - क्रिश्चियन स्मिथ एवं माईकेल ओ० ईमर्सन, पासिंग द प्लेट, पेज 27.

प्रत्येक काल में परमेश्वर के लोग रहे हैं जो उसके उद्देश्य के लिये धन संग्रह की इच्छा करते थे। हम सभी को समझने की और इस विश्वव्यापी कार्य को एक साथ करने के लिये अर्थ व्यवस्था की एक जिम्मेदारी है। हम उद्देश्य हेतु धन संग्रह के विषय में अव्यवस्थित लापरवाह, या बेतरतीब नहीं हो सकते।

हमारी ललकार इससे बढ़कर है जब लोगों और लेवियों ने नहेमियह से कहा, "हम परमेश्वर के भवन को न छोड़ेंगे" (नहे० 10: 39), और 1800 ईसवी के लगभग विश्वासियों ने जो सामना किया उससे अधिक भयभीत करने वाला है। आज सदस्यों और पुरोहित वर्ग को आत्मिक रूप से एक होने की जरूरत है और आर्थिक रूप से एक रास्ते में साथ चलने की जरूरत है जो

विश्वव्यापी उद्देश्यों को पूरा करता है और मिशन (उद्देश्य) के लिये धन संग्रह करता है।

संसार में ऐडवेंटिस्ट मिशन के विस्तीर्ण सीमा के विषय सोचें (देखें प्रका० 14:6-7)। इस कार्य के निमित्त धन संग्रह में मदद से संबंधित हमारी जिम्मेदारी को हमें कैसे समझना चाहिए?

सोमवार **फरवरी 19**

परमेश्वर की आशीषें

जैसे कि हमने मलाकी 3:10 में देखा, परमेश्वर ने उन्हें महान् आशिष की प्रतिज्ञा की जो अपने दशमांश में विश्वस्त रहे। तथापि परमेश्वर की आशिष एक आयामी नहीं है। दृष्टान्त के लिये, आशिष के तौर पर प्रत्येक चीज की कीमत पर भौतिक धन संचय पर जोर देना, परमेश्वर की वास्तविक आशिष के उलट बहुत ही संकीर्ण दृष्टिकोण है।

मलाकी में आशिष आत्मिक के साथ-साथ लौकिक भी है। परमेश्वर की आशिष मुक्ति, आनन्द, मन की शांति द्वारा साबित की गई है, और परमेश्वर वह कर रहा है जो हमारे लिये बेहतर है। जब हम परमेश्वर द्वारा आशीषित होते हैं, हम उन आशिषों को कम अनुकूलता में साझा करने को बाध्य होते हैं। हम दूसरों को आशिष देने के लिये आशीषित हुए हैं। सचमुच, परमेश्वर हमारे द्वारा अपनी आशिषों को अन्यत्र विस्तार देने में सक्षम है।

पढ़ें 1पतरस 3:8-9। आशीषित होना और दूसरों के लिये आशिष होने के बीच में संबंध के विषय पतरस हमें क्या कह रहा है?

_____

_____

_____

दशमांश देने से दो गुणी आशिष मिलती है। हम आशीषित हैं; और हम दूसरों के लिये आशिष हैं। हमें जो दिया गया है उसमें से हम दे सकते हैं। परमेश्वर की आशिषें हमारी ओर अंदरूनी रूप से आती हैं और दूसरों के लिये बाह्य रूप से जाती है। "दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा. . . क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा" (लूका 6:38)।

पढ़ें प्रेरितों 20:35, दशमांश देने में यह किस प्रकार लागू होता है।

दशमांश देने की महान् आशिष हमें परमेश्वर पर भरोसा करना सिखलाती है (यिर्म० 17:7)। "दशमांश देने की खास विधि एक सिद्धान्त

के तहत खोजी गई जो परमेश्वर की व्यवस्था के समान चिरस्थाई है। दशमांश देने की यह विधि यहूदियों के लिये एक आशिष थी, यदि परमेश्वर ने उन्हें यह न दिया होता। अन्त के समय में भी जो इसे मानते हैं यह आशिष का कारण होगा। हमारे स्वर्गीय पिता ने सुनियोजित भलाई की योजना स्वयं को सम्पन्न बनाने के लिये शुरू नहीं की, परन्तु मनुष्य की महान् भलाई होने के लिये की। उसने देखा भलाई की यह विधि वह थी जिसे मनुष्य को जरूरत थी। – एलेन जी० ह्वाईट, टैस्टीमेनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 3, पेज 404, 405.

आपको किसी ने सेवकाई दी, आप परमेश्वर के द्वारा अनेक बार आशीषित हुए हैं, इस विषय पर चिंतन करें। तब आप इसी रीति से जाकर दूसरों के लिये क्या कर सकते हैं?

मंगलवार **फरवरी 20**

दशमांश का उद्देश्य

पौलुस तीमुथियुस को लिखता है: "दांवने वाले बैल का मुँह न बाँधना, क्योंकि मजदूर अपनी मजदूरी का हकदार है" (1तीमु० 5: 18)। वह व्य०वि० 25: 4 में बैल से संबंधित मूसा को और लूका 10: 7 से यीशु को मजदूर से संबंधित प्रस्तुत करता है। बैल से संबंधित वाक्यांश एक नीतिवचन के समान प्रकट होता है, और इसका अर्थ यह है कि काम करते वक्त बैल को अनाज खाने देना न्यायसंगत है। इस रीति से दूसरा नीति वचन का अर्थ है कि समर्पित मजदूर जो सुसमाचार का प्रचार करते हैं मजदूरी से पुरस्कृत किये जाने चाहिए।

परमेश्वर तरीकों से सृष्टि करता और कार्यान्वित करता है। उसने सौर परिवार, परिस्थिति की तंत्र, पाचन तंत्र, स्नायु तंत्र, एवं अनेक को स्थापित किया है। दशमांश विधि लेवियों द्वारा व्यवहार किया जाता था (गिनती 18: 26) और यह मंदिर की सेवकाई और उनके सहारे के लिये होता था। आज के समकक्ष वे हैं जो सुसमाचार प्रचार के लिये अपने जीवनों को समर्पित कर देते हैं। परमेश्वर की दशमांश देने की विधि सेवकाई में सहारा देने के लिये उसका चुना हुआ साधन है, और यह समस्त उद्धार के इतिहास में व्यवहार में है। ऐसे मजदूरों को दशमांश द्वारा सहारा देना, तब परमेश्वर के काम का बुनियादी और मूलभूत सिद्धांत है।

पौलुस का क्या अर्थ है और इस वाक्यांश का नैतिक निहितार्थ क्या है "जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं, उनकी जीविका सुसमाचार से हो" (1कुरिं०

9:14)? वे जो सुसमाचार फैलाते हैं उनकी सहायता की जरूरत के विषय 2कुरि० 11:7-10, क्या सिखलाता है?

_____

_____

_____

जब पौलुस ने कहा, "मैंने और कलीसियाओं को लूटा अर्थात् मैंने उनसे मजदूरी ली, ताकि तुम्हारी सेवा करूँ" (2कुरिं० 11:8), जब वह धनी कुरिन्थ कलीसिया की सेवा कर रहा था, वह व्यंग्यपूर्वक गरीब मकिदुनिया की कलीसिया से मजदूरी लेने की बात कर रहा था। कुरिन्थ कलीसिया को उसके इंगित करने का अर्थ था कि जो सुसमाचार प्रचार करने का काम करते हैं उन्हें मजदूरी मिलने का हक है।

दशमांश एक विशेष उद्देश्य के लिये व्यवहार किया जाना है और इसे ऐसा ही होना चाहिए। "दशमांश एक खास काम के लिये अलग किया गया है। इसे गरीब फंड के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए। यह विशेष रूप से उनके लिये समर्पित होना चाहिए जो परमेश्वर के संदेश को संसार में फैला रहे हैं; इस उद्देश्य से इसे अलग नहीं किया जाना चाहिए।" - एलेन जी० ह्वाईट, कौन्सिल्स ऑन स्टीवार्डशिप, पेज 103.

पढ़ें लैव्य० 27:30, यहाँ पर सिद्धांत किस प्रकार दिखता है जो आज हमारे साथ लागू होता है?

बुधवार **फरवरी 21**

भण्डार गृह

परमेश्वर के पास हवा (यिर्म० 10:13), पानी (भजन० 33:7), और बर्फ एवं ओले का भण्डार गृह (अय्यूब 38:22) है, जिस पर इसका पूरा नियंत्रण है। परन्तु परमेश्वर का बहुत अधिक मूल्यवान भण्डार गृह वह है जो दशमांश को शामिल करता है। "फिर मिलाप वाले तम्बू की जो सेवा लेवी करते हैं उसके बदले मैं उनको इस्राएलियों का सब दशमांश उनका निज भाग कर देता हूँ" (गिनती 18:21), यह पदस्थल प्रथम है जो चर्चा करता है कि दशमांश कहाँ रखा जाता है और आज भी "भण्डार गृह सिद्धांत के तौर पर जाना जाता है। परमेश्वर ने इस्राएलियों को आगे अपने चुने हुए स्थान पर दशमांश लाने का निर्देश दिया (व्य० वि० 12:5-6)।

सुलैमान के समय में, दशमांश यरुशलेम के मंदिर को लौटाया जाता था। इस्राएली सहजता समझ जाते थे कि भण्डार गृह क्या और कहाँ था जब

भविष्यद्वक्ता मलाकी ने उन से कहा: "सारे दशमांश भण्डार में ले आओ" (मलाकी 3: 10)। भण्डार गृह स्थान को दर्शाता था जहाँ पर धार्मिक सेवाएँ होती थीं और जहाँ पर लेवियों को सहायता दी जाती थी।

भण्डारगृह को चिह्नित करने के लिये पवित्र शास्त्र में कौन-से दूसरे नाम प्रयोग किये गये हैं? 1इति० 26: 20, 2इति० 31: 11-13, नहे० 10: 38.

_____

_____

पवित्र दशमांश को भण्डारगृह में लाना पवित्रशास्त्र में एकमात्र नमूना पेश है। प्रत्येक विधान में, परमेश्वर के दशमांश को व्यवस्थित करने का एक केंद्रीय भण्डार गृह है। सेवेंथ-डे ऐडवेंटिस्ट एक विश्वव्यापी धर्म/कलीसिया का गठन करते हैं जिसमें भण्डार गृह सिद्धांत को ग्रहण किया और अभ्यस्त किया जाता है। सदस्यगण स्थानीय चर्च द्वारा कांफ्रेन्स/मिशन को अपना दशमांश वापस करने के लिये प्रोत्साहित किये जाते हैं जहाँ पर उनकी सदस्यता है। वह कांफ्रेन्स/मिशन कोषागार है जहाँ पर पाद्रीगण अपनी मेहनताना पाते हैं।

"जैसे परमेश्वर के काम का विस्तार होता है, सहायता के लिये बुलाहट अधिक से अधिक बार होगी। इन बुलाहटों का जवाब दिया जाना है, मसीहियों को आदेश पर ध्यान देने की जरूरत है, 'सारे दशमांश भण्डार में ले आओ कि मेरे भवन में भोजन वस्तु रहे।' मलाकी 3: 10, यदि मानने वाले मसीही विश्वस्त-पूर्वक अपने दशमांशों और दानों को लायें तो उसका भण्डार भर जायेगा। तब सुसमाचार की सहायता के लिये फंड खड़ा करने हेतु मेलों के आयोजन, लॉटरियाँ, या मनोरंजन की पार्टियाँ करने की आवश्यकता नहीं रह जायेगी।"- एलेन जी० ह्वाईट, द एक्टस ऑफ अपोसल्स, पेज 338.

सोचें, यदि लोग अपने दशमांश को जहाँ वे चाहें वहाँ भेजें तो क्या होगा। यदि सभी ने वही किया तो परमेश्वर के काम का क्या होगा? इसलिये, यह क्यों महत्त्वपूर्ण है कि हम हमारे दशमांश वहीं भेजें जहाँ इसे होना चाहिए?

बृहस्पतिवार **फरवरी 22**

विश्वास द्वारा दशमांश और उद्धार

पढ़ें, रोमियों 3: 19-24. कौन-सा निर्णायक सत्य, जो हमारे विश्वास का केन्द्र है, यहाँ पर सिखाया जाता है? हमें क्यों हमेशा इस शिक्षा को हमारे विश्वास की बुनियाद रखना चाहिए?

_____

_____

बाईबलीय संवाद का सारांश यह है कि हम सब उद्धार के लायक नहीं (रोम० 3: 23)। यदि हम इसके हकदार हैं, तो यह गुण के कारण या कामों के द्वारा, और वह अवधारणा पवित्र शास्त्र के विपरीत है।

पढ़ें, रोमियों 4: 1-5, गुण के विरोध के तौर पर अनुग्रह के विषय ये पदस्थल क्या सिखलाते हैं?

_____

_____

इस प्रकार उद्धार एक उपहार है (इफि० 2: 8-9) जो नालायक को दिया गया है। उद्धार आता है क्योंकि मसीह की सिद्धता हमारे खाते में डाली गयी है। दशमांश के संबंध में, इसे वापस करने के द्वारा परमेश्वर से श्रेय प्राप्त नहीं किया जा सकता। आखिरकार, यदि दशमांश परमेश्वर का है जिससे शुरू किया जाये, उसे यह वापस करने में संभवत: कौन-सा सद्‌गुण वहाँ हो सकता है?

दशमांश देना वह कार्य नहीं जो हमें बचाता है, कोई दूसरे अच्छे कामों की अपेक्षा अब जो हम मसीहियों के तौर पर करने को सृजे गये हैं। "क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले कामों के लिये सृजे गये जिन्हें परमेश्वर ने पहले से हमारे करने के लिये तैयार किया" (इफि० 2: 10)।

तथापि, दशमांश की वापसी एक प्रवृति को दर्शाता है जो या तो नम्र और आज्ञाकारी है या जिद्दी और विद्रोही है उससे संबंध रखते हुए जो परमेश्वर ने हमें करने को कहा है। यदि हम परमेश्वर से प्रेम रखते हैं तो उसकी हम मानेंगे। दशमांश हमारे एहसास की बाह्य अभिव्यक्ति है कि हम सचमुच यहाँ पर भण्डारी हैं, और यह कि हम प्रत्येक चीज के लिये परमेश्वर के आभारी हैं। जिस प्रकार सब्त सृष्टिकर्त्ता और उद्धारकर्त्ता के तौर पर परमेश्वर का सप्ताहिक स्मारक है दशमांश वापस करना उसी प्रकार कार्य कर सकता है: यह हमें याद दिलाता है कि हम अपने स्वयं के नहीं हैं और यह कि हमारा जीवन और उद्धार परमेश्वर के उपहार हैं। परिणामस्वरूप हम उस वास्तविकता को पहचान सकते और विश्वास का जीवन जीते हैं, आभार व्यक्त करते हुए कि दशमांश की वापसी उस विश्वास की एक बहुत मूर्त अभिव्यक्ति है।

विश्वास द्वारा जीने के अर्थ के विषय में लूका 21: 1-4 हमें क्या कहता है?

अतिरिक्त विचार : यह भूलना इतना सहज है कि हरेक श्वांस, हरेक धड़कन, हमारे अस्तित्व का हरेक क्षण केवल परमेश्वर की ओर से आता है। प्रेरितों 17 में पौलुस एथेन्सवासियों के साथ सच्चे परमेश्वर के विषय बातें करता है, जो केवल सृष्टिकर्त्ता ही नहीं (जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उसकी सब वस्तुओं को बनाया" [प्रेरितों 17:24] वरन पोषण करने वाला भी है ("क्योंकि हम उसी में जीवित रहते और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं" [प्रेरितों 17:28])। एथेन्सवासी सच्चे परमेश्वर के विषय नहीं जानते थे। जैसा हम मसीही करते हैं, और यह एहसास हमारे जीवन का केन्द्र होना चाहिए। परमेश्वर के हममें बहुत दावे हैं, परिणामत: हमें उन दावों के अनुसार जीना है:

"इसलिये हमारे ऊपर परमेश्वर के दावे हैं। वह अपने खजानों को मनुष्यों के हाथों में डालता है, परन्तु मांग करता है कि दशमांश अपने काम के निमित्त विश्वस्तता से अलग किया जाना चाहिए। वह इस भाग को अपने खज़ाने में रखने की मांग करता है। यह अपने स्वयं के तौर पर दिया जाना चाहिए; यह पवित्र है और पवित्र प्रयोजन के लिये जो उद्धार के संवाद को संसार के सभी भागों में ले जाते हैं। वह इस भाग को सुरक्षित करता है, इसका अर्थ कि उसका खजाना हमेशा बहुतायत से रहे और सत्य की ज्योति उन तक पहुँचे जो दूर और पास हैं। विश्वस्तपूर्वक इस आवश्यकता को पूरी करते हुए हम आभार व्यक्त करते हैं कि सब कुछ परमेश्वर का है।"– एलेन जी० ह्वाईट, टेस्टीमोनीज फॉर द चर्च, वॉल्यूम 6, पेज 386.

विचार विमर्श के लिये प्रश्न :

1. "समय रफ्तार के साथ अनंत में समाप्त हो रहा है। चलिये हम परमेश्वर से अलग न रखें जो उसी का है। हम उसे इनकार न करें जो, यद्यपि बिना सद्‌गुण के दिया नहीं जा सकता, बिना बर्बादी के इनकार नहीं किया जा सकता। वह सम्पूर्ण हृदय की मांग करता है; यह उसे दे दे; दोनों सृष्टि के द्वारा और उद्धार के द्वारा यह उसका है। वह आपकी बुद्धि की मांग करता है: यह उसे दे दें; यह उसका है। वह आपके पैसे की मांग करता है; यह उसे दे दें; यह उसका है।"– एलेन जी० ह्वाईट, द एक्टस् ऑफ द अपोसल्स, पेज 566. एलेन जी० ह्वाईट का क्या अर्थ है जब वह कहती है, "चलिये हम परमेश्वर से अलग

न रखें जो उसी का है... जौभी कि यह सद्‌गुण के बिना दिया नहीं जा सकता, बर्बादी के बिना इनकार नहीं किया जा सकता"? जब हम दशमांश नहीं देते हैं हम स्वयं से क्या लूटते हैं?

2. इस विचार पर चिंतन करें सभी चर्च मेम्बर दशमांश से जो चाहे करते हैं; वह यह कि जिस भी विषय का ये अधिक महत्त्व समझते वहाँ इसे भेजते हैं, जो कि "भण्डार गृह" के विपरीत है। किस प्रकार यह विचार बुरा है? हमारी कलीसिया का क्या होगा? ऐसे कार्य क्यों हमारे बीच एक भयंकर दरार पैदा करने में मददगार होता है?

3. लूका 21 में यीशु ने विधवा की अपने पैसे मंदिर में देने के लिये प्रशंसा की, सब भ्रष्टाचार के बावजूद भी जिसे उसको पता था जो वहाँ हो रहा था। उनके लिये यह क्या कहना चाहिए जिनको लगता है कि वे अपने दशमांश को दूसरे काम में लगा सकते हैं क्योंकि उनके पास इसके विषय प्रश्न हैं कि किस प्रकार यह व्यवहार किया जा रहा है?